श्रमण

ŚRAMAṆA

(Since 1949)

A Quarterly Referred Research Journal of Jainology

Vol. LXIX No. IV October-December, 2018

Editor

Dr. Shriprakash Pandey

Associate Editors

Dr. Om Prakash Singh **Dr. Sanjay Kumar Singh**

Parshwanath Vidyapeeth, Varanasi

(Established: 1937)

(Recognized by B. H. U.as an External Research Centre)

Address:

I T I Road, P.O., B. H. U , Varanasi 221005

Email: pvpvaranasi@gmail.com

Website: www.pv-edu.org

Phone: 0542-2575890

Mob: 9936179817

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

Contents

१. उवासगदसाओ में अपरिग्रह धर्म :
इच्छा-परिमाण-व्रत के विशेष सन्दर्भ में 1-7
डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा

२. प्राकृत वाङ्मय में वर्णित सम्यग्दर्शन
का स्वरूप एवं महत्त्व 8-22
आशीष कुमार जैन

३. जैन धर्म और आदिवासी बस्तर:
तीर्थंकर पार्श्वनाथ के विशेष संदर्भ में 23-38
डॉ. शिव शंकर

४. कुषाण कालीन मथुरा लेखों में कोटिक गण
डॉ. अर्पिता चटर्जी 39-48

५. Sāmāyika-Pāṭha (English Translation)
Dr. S. P. Pandey 49-59

6. Dharma -The Guiding Light-Jaina Perspective
Dr. Priydarshana Jain 60-69

7. Science behind Truthful Speech
Dr. Samani Agam Prajna 70-75

विद्यापीठ के प्रांगण में 76-81
जैन जगत् 82
पुस्तक समीक्षा 83-85
सुरसुन्दरी 1-99

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

उवासगदसाओ में अपरिग्रह धर्म : इच्छा-परिमाण-व्रत के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा

इच्छाओं का अर्जन पदार्थवाद एवं इच्छाओं का विसर्जन अध्यात्मवाद है। जब इच्छाओं का अल्पीकरण होता है तब व्यक्ति केवल अपने सुख के लिए नहीं, सबके सुख के लिए जीने की दिशा में चरणन्यास कर देता है। भारतीय संस्कृति में तप, त्याग और पवित्रता इन गुणों का बहुत बड़ा स्थान है। त्याग के बिना ज्ञान नहीं मिलता। आसक्ति की जड़ जब तक जमी हुई है, ज्ञान की उपलब्धि सुलभ नहीं होती। जीवन में जैसे–जैसे ज्ञान की अनुभूति होने लगती है, वैसे–वैसे त्याग भी होने लगता है। जैन दर्शन का कथन है – 'आयतुले पयासु'। प्रत्येक प्राणी को अपने समान समझो। जब भीतर से आत्मा की समानता का स्वर प्रकट होता है तो प्राणों में प्राणी मात्र के प्रति एक प्रकम्पन पैदा होता है और व्यक्ति, सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय का मार्ग स्वीकार कर लेता है। संयम इसका फलित है। इच्छा–परिमाण, परिग्रह का अल्पीकरण या विसर्जन संयम का ही व्यावहारिक रूप है।

भगवान् महावीर ने दो प्रकार के धर्मों का प्रतिपादन किया– अगार धर्म और अनगार धर्म। जिनशासन में प्रव्रजित होने वाले अनगार धर्म का पालन करते हैं और गृहस्थ श्रमणोपासक–श्रमणोपासिकायें–अगार धर्म का परिपालन करते हैं। धर्म सार्वभौम, सार्वजनीन, सर्वकल्याणकारी है। उसमें गृहस्थ और साधु के बीच कोई व्यवधान नहीं है। भगवान् ने गृहस्थों को कभी धर्म से वंचित नहीं रखा। अतः भगवान् महावीर के काल में बहुत सारे ऐसे गृहस्थ थे जो सम्यक्तया अगार धर्म का पालन करते थे। इन श्रावकों में से प्रमुख दस श्रावकों के व्रत–संयम, इच्छा परिमाण का सुव्यवस्थित निरूपण करने वाला अंगप्रविष्ट के अन्तर्गत सातवां अंग है – 'उवासगदसाओ'। उपासकदशा में उपासकों की अवस्था का वर्णन है, इसलिए इसका नाम उपासकदशा है। इसमें दस श्रावकों का जीवन वृत्तांत है, इसलिए इस सूत्र का नाम उपासकदशा है। उपासकदशा श्रावक धर्म का प्रतिनिधि आगम ग्रंथ है जैसा कि पहले बताया गया। भगवान् महावीर ने मुनि धर्म और उपासक धर्म, इस द्विविध धर्म का उपदेश दिया था। मुनि के लिए पांच महाव्रतों का विधान किया और उपासक के लिए बारह व्रतों का। श्रमण के आचरणीय पंच महाव्रतों में अंतिम एवं पांचवां व्रत है अपरिग्रह। साधना के सर्वोच्च शिखर पर आरोहरण करने के लिए लाघवपन अत्यावश्यक है। लाघवपन की प्राप्ति के लिए तृष्णा पर विजय पाना जरूरी है। आसक्ति अथवा तृष्णा ही परिग्रह का मूल है। इससे आत्मिक

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner